RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 17 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 29 सितम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड की राजनीति में तरावट

पुष्कर सिंह धामी के चेहरे पर ही भाजपा का दांव

कांग्रेस हरदा की अगुवाई, हरक के जोश पर सवार

उक्रांद में युवाओं का जोश, ऐरी का अनुभव

कार्यालय प्रतिनिधि

घनघोर बरसात ने इस बार उत्तराखण्ड को जितना ज्यादा उधेड़ कर रख दिया है उससे बहुत सारे स्थानों पर आज तक उदासी बनी हुई है प्रदेश की राजनीति में तरावट बढ़ती जा रही है। इस पर्वतीय प्रदेश में चाहे कुछ हो, कुर्सी दौड़ के दीवाने कम नहीं हैं। पिछली बार छात्र संघ चुनाव किन्हीं कारणों से टल गये थे लेकिन इस बार प्रदेश की उच्चशिक्षा छात्र संघ चुनाव के रंग देख चुकी है। इस चुनाव के लिये छात्र नेताओं ने विश्व विद्यालयों से लेकर महाविद्यालयों तक खूब प्रदर्शन किया। उच्चशिक्षा के हालात यह हो चुके हैं कि युवाओं का रुझान इस ओर कम हो रहा है लेकिन चुनाव की उलझन में उलझे युवा नेता और जिनका लक्ष्य नेतागिरी ही है वह इसमें खुलकर सवार हैं। वैसे भी 2027 के विधानसभा चुनाव को लेकर छोटे-बड़े नेता अपनी तैयारियों में हैं तो इस बार के हर चुनाव को महत्वपूर्ण माना जा रहा है। छात्र संघ चुनाव में भी इसी बात का हंगामा रहा। एबीवीपी और एनएसयूआई कार्यकर्ता जगह-जगह भिड़े तो तीसरी ताकत के रूप में निर्दलीय भी कम नहीं थे।

प्रदेश की राजनीति में जो तरावट दिखाई दे रही है उसमें भाजपा और कांग्रेस के अलावा तीसरे मोर्चे के रूप में युवाओं की जुट उक्रांद की ओर है।

शेष अन्तिम पृष्ठ पर

भारत के मीलपत्थर

सत्यवती को जानना हो तो थोड़ा साहस सँजोइए

सूर्यकान्त बाली

इसमें सन्देह नहीं कि जिन दिनों 'महाभारत' का घटनाक्रम इस धरती पर घट रहा था, वह समय खासा तनावों से भरा था। यह तनाव ही तो था कि जिसके मारे महाभारत नामक प्रबन्ध काव्य का हर छोटा-बड़ा पात्र या तो प्रतिज्ञाएँ कर रहा था या फिर संकल्प धारण कर रहा था। जरूरी नहीं कि हर प्रतिज्ञा सात्विक कारणों से की जा रही हो। पर प्रतिज्ञाएँ की जा रही थीं, संकल्प धारण किए जा रहे थे तो समाज के वातावरण को आप सहज कह ही नहीं सकते। यकीनन बालक एकलव्य के संकल्प को, कि वह द्रोण नहीं तो द्रोण की प्रतिमा से प्रेरणा लेकर धनुर्विद्या सीख लेगा, हम एक सात्विक संकल्प कह सकते हैं। भीष्म ने जब सत्यवती के पिता के आगे प्रतिज्ञा की कि न तो वे हस्तिनापुर का राज्य ही माँगेंगे और न ही आजीवन विवाह करेंगे, तो इस प्रतिज्ञा को भी हम सात्विक के अलावा और क्या कह सकते हैं, बेशक इस प्रतिज्ञा के कारण पूरे कुरुवंश को और स्वयं भीष्म को भी किन-किन तनावों से होकर गुजरना पड़ा। परन्तु बाकी प्रतिज्ञाएँ? अर्जुन की? द्रोपदी की? भीम की? द्रोण की? कर्ण की? वे तनावों से पैदा भी हुई और तनावों का कारण भी बनीं। जाहिर है कि ऐसी सब प्रतिज्ञाएँ 'महाभारत' कथा के नायकों के व्यक्तिगत अहंकार का ही प्रतीक थीं, एक ऐसा अहंकार, जो कभी कोई सीमा जानता ही नहीं था।

तनाव और अहंकार से सराबोर इस माहौल में कुरुकुल की पाँच कुलवधुएँ कैसी नजर आती हैं? अम्बा (जो इस कुल के साथ औपचारिक रूप से कभी जुड़ नहीं पाई), सत्यवती, गान्धारी, कुन्ती और द्रौपदी। इन पाँच नारी पात्रों को आप सामान्य व्यक्तित्व कह ही नहीं सकते। सभी का अपना एक दुर्धर्ष व्यक्तित्व है, और कुरुकुल को बनाने में हरेक का अपना खास योगदान रहा है। इसमें से चार- अम्बा, गान्धारी, कुन्ती और द्रौपदी का सम्बन्ध राजकुलों से रहा है, इसलिए इनको आँकने का मानदण्ड अपने आप ही एक अलग किस्म का बन जाता है, पर सत्यवती?

सत्यवती को विशेष रूप से याद न करें तो नाम अक्सर दिमाग से निकला रहता है। जो बात सत्यवती के बारे में सहज रूप से याद आ जाती है वह यह है कि यही वह नारी है, जिसे पाने के लिए शान्तनु इस कदर आकुल हो गए थे कि इसके लिए भीष्म को वे प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ीं, जिनके कारण वे देवव्रत से भीष्म हो गए। इसलिए याद दिलाएँ, तभी आता है कि वेदव्यास, वे वेदव्यास जिन्होंने अपने युग को विलक्षण बौद्धिक नेतृत्व प्रदान किया, सत्यवती के गर्भ से पैदा हुए थे, जब सत्यवती एक अविवाहित कन्या थी। यह भी याद दिलाना पड़ता है कि अपने इसी पुत्र के माध्यम से जिस नारी ने सदा के लिए इस पृथ्वी से अन्त होने जा रहे अपने कुरुकुल को बचाया, उसका नाम भी वही है- सत्यवती।

ऐसे पढ़ने पर ये दोनों बातें सामान्य नजर आ सकती हैं, पर थोड़ा इत्मीनान से परखेंगे तो मालूम पड़ेगा कि कितना अद्भुत था सत्यवती नामक इस विशिष्ट कुरुकुलवधू का चरित्र, जिसने अपने पति के इस कुल को समूल नष्ट होने से बचा लिया और यह काम इस तेजस्वी नारी ने तनाव के जिस माहौल में किया, उसका पूरा महत्व तभी समझ में आएगा, यदि थोड़े में इस माहौल पर एक विहंगम दृष्टि डाल ली जाए।

इस माहौल का सम्बन्ध उस युग की काम (सेक्स) सम्बन्धी धारणाओं और परम्पराओं से है। पूरी 'महाभारत' पढ़ने से यही नजर आता है कि हमारे समाज में उस समय 'काम' को लेकर वैसी कुंठाएँ और वर्जनाएँ नहीं थीं, जैसी आज से सदी भर पहले थीं और जिन कुंठाओं और वर्जनाओं को तोड़ने से हमारा समाज अब मूर्खताओं और कुरुचि के नए-नए मानदण्ड कायम करने का दूसरा अतिवादी काम कर रहा है। पर कुंठाओं और वर्जनाओं से विहीन महाभारत समाज में भी कौमार्य रक्षा का बोध किस कदर हमारे पूर्वजों के मानस पर हावी था, इसके उदाहरण भी हमारे सामने हैं। एक उदाहरण कुन्ती का है, जिसे विवाह से पूर्व ही कर्ण नामक पुत्र की प्राप्ति हो गई थी, परन्तु उसके कौमार्य को संदिग्ध न मान लिया जाए, इसलिए उसने अपने पुत्र को नदी में प्रवाहित कर दिया, जिसके कारण आगे चलकर कुन्ती और कुन्ती पुत्र कर्ण का जीवन किस कदर तनाव से भरा रहा, यह हम सभी को ज्ञात है। दूसरा उदाहरण स्वयं सत्यवती का है। पाराशर ऋषि से सत्यवती को वेदव्यास नामक पुत्र की प्राप्ति हुई, जब वह अविवाहित थी, पर सत्यवती का कौमार्य इससे भंग नहीं हुआ, उसे लेकर महाभारत में कई तरह की कथाओं को जन्म दे दिया गया। उनमें से एक कथा का सम्बन्ध सत्यवती के जन्म से जोड़कर उसके जन्म को थोड़ा अलौकिकता का स्पर्श दे दिया गया। उसे उपरिचर वसु नामक राजा की ऐसी कन्या कहा गया, जिसकी माँ आद्रिका ब्रह्मा के शाप के कारण मछली के रूप में अप्सरा बन गई थी। जब वह मछली मल्लाहों के हाथ लगी तो उसका

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जनप्रतिनिधि और अधिकारी

उत्तराखण्ड में बार-बार नेताओं के द्वारा सवाल उठाए जा रहे हैं नौकरशाही हाबी हो चुकी है। अधिकारी किसी की नहीं सुन रहे हैं और पूरी व्यवस्था को अपने हिसाब से हांक रहे हैं। दूसरी ओर यह भी देखने में आ रहा है कि गली कूचे का छोटे से छोटा नेता भी चाहता है कि वह बड़े से बड़े अधिकारी को रौब दिखाए। इसके अलावा जब से सोशल मीडिया का प्रचलन बढ़ा है नेता और अधिकारी अपनी-अपनी रौबीली छवि प्रस्तुत कर रहे हैं। विधायक, मंत्रियों की तो पूछो ही मत.....।

इन दिनों में सबसे ज्यादा चर्चा कैबिनेट मंत्री मसूरी के विधायक गणेश जोशी हैं जिन्होंने राह चलते जिलाधिकारी सविन बंसल को टोक दिया और कहा- अपने रंग ढंग सुधार लो। मंत्री का इस प्रकार कहना और डीएम का उन्हें हाथजोड़कर आगे बढ़ जाना बहुत कुछ दर्शा गया। इस घटना के बाद मंत्री गणेश जोशी अपने बयान में कहते रहे- वह जनप्रतिनिधि हैं। लोगों के बीच जाना होता है। मा.मुख्यमंत्री धामी और हम सब बहुत तत्परता से जुटे हैं इत्यादि। हो सकता है मंत्री महोदय को आभास हुआ हो कि वह सार्वजनिक रूप से जिले के बड़े अधिकारी को किस प्रकार टोक चुके थे। इस बीच सोशल मीडिया पर कई जगह उनकी आलोचना होने लगी कि कब किस प्रकार से बात कही जाती है इस बात का ध्यान रखना चाहिये, एक आईएएस को इस प्रकार से टोकना उचित नहीं जबकि वह आपदा के कार्यों में लगातार दौड़भाग कर रहे हैं।

इस पूरे प्रकरण में किसी एक को दोषी मानना गलत होगा क्योंकि दोनों पक्षों का जिद लम्बे समय से दिखाई दे रही है। जनप्रतिनिधि मान बैठे हैं कि वह मुंह से जो कह दें वह तत्काल हो जाए और उनकी बात मानी जाए। दूसरी ओर अधिकारी वर्ग यह मानने लगा है कि उनके हाथ में कमान है इसका प्रयोग अपने अनुसार कर लेंगे। मंत्री जोशी पर पहले से कई आरोप के अलावा उनके तीखे बोलों के आरोप हैं जबकि डीएम बंसल पर एकाएक सीधेमुंह बात न करने के आरोप हैं। इसलिये जरूरी है कि दोनों पक्ष 'जिद' की जगह न्यायपूर्ण तरीका देखें। एक अधिकारी को सरे राह टोकना, अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के आगे किसी कर्मचारी पर रौब दिखाना, छात्रों के आगे किसी कर्मी को फटकारना जैसे कृत्य शोभायमान नहीं होते हैं। इसी प्रकार यदि अधिकारी किसी से सीधेमुंह बात न करे, किसी के फोन करने पर उनकी न सुने, अपने कार्यालय में न मिले, आम फरियादी की न सुने तो यह भी घोर लापरवाही कहा जाएगा।

फोन न उठाने की बात तो धारचूला विधायक हरीश धामी ने भी कही है। श्री धामी ने उनके विधानसभा के आला अधिकारियों पर रोष जताते हुए कहा कि वह जब एक प्रतिनिधि का फोन नहीं उठा सकते हैं तो उनसे क्या उम्मीद की जाए। इस प्रकार की सारी बातों और घटनाओं को देखते हुए कहना है सूझबूझ की जाए अन्यथा विवादों में समय नष्ट होगा।

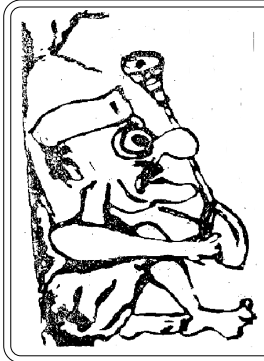

फसक

दाज्यू, प्रचार-प्रसार का जोर चल रहा ठैरा

खरी-खरी सुनकर भी हरी-हरी हो रहे हैं बल

दाज्यू, गाँव की रामलीला शुरू होने वाली है। अभी तक श्राद्ध के कारण पण्डित जी व्यस्त थे। ऑफिस वाला मगनदा तो हमेशा ही व्यस्त ठैरा। कह रहा था- 'नाक में दम कर रखा है। फाइलों का काम तो घण्टे भर में निपट जाता है लेकिन बड़े साहब के कहने पर फिल्ड जैसा काम भी करना होता है। फोटो-वीडियो डालने जरूरी हुए।' दाज्यू, जमाना ही जोर का है। प्रचार प्रसार का जोर चल रहा ठैरा। अधिकारी भी घूम-घूम कर वीडियो-फोटो में ध्यान दे रहे हैं। सोशल मीडिया पर टेकते रहो तो लगता है जमाना अपनी गति पर है। दाज्यू, मगनदा ठीक ही कह रहे थे कि फनफनाते हुए दिखाई देना जरूरी हो गया है। पब्लिक को लगना चाहिये साहब हाथ पैर भी हिलाता है। दाज्यू, चाहे कुछ कर लो, पब्लिक भी समझ ही रही है। श्रीनगर क्षेत्र अन्तर्गत नर्सरी रोड पर पर्यटन विभाग के गेस्ट हाउस के पीछे से फोटो खिंचवाते हुए अलनन्दा में गिर गया। दाज्यू, रील फोटो का चस्का इतना भयंकर हो चुका है कि कोई मानने को तैयार नहीं।

अब नेताओं की तो पूछो मत। खरी खरी सुनकर भी हरी-हरी हो रहे हैं बल। नैनीताल के कोटाबाग ब्लाक के रानीकोटा ग्रामसभा में भाजपा सेवा पखवाड़ा में विधायक सरिता आर्या को ग्रामीण ने खरी सुना दी। मंच पर दायित्वधारी भी मौजूद थे। दाज्यू, बहुत हंगामा मच गया था। बाद में विधायक ने कहा- 'कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शराब के नशे में एक सोची समझी साजिश के तहत हमारे कार्यक्रम में आकर हंगामा किया।' दाज्यू, किसको सच मानो और किसको झूठ? कोई झुकने को तैयार नहीं है इस दुनिया में। बागेश्वर में भी व्यापारियों के दो गुट हो चुके हैं। नगर की नई कार्यकारिणी के चुनाव मामले में व्यापारियों का गुस्सा खुलकर दिखाई दिया। हल्द्वानी के तराई केन्द्रीय वन प्रभाग की मोटाहल्दू वीट में खैर के 81 पेड़ों की कटाई में रेंजर साहब को निलम्बित कर दिया गया। इससे पहले वन आरक्षी व डिप्टी रेंजर साहब पर गाज गिर चुकी थी। दाज्यू, चोरी-चकारी भी बड़ा दुर्लभ संजोग ठैरा पता नहीं किसके कपाल पर क्या लिखा है। सरकारी कामकाज में नौकरी का जितना मजा है उताना ही बबंडर भी हो जाने वाला हुआ। कब किस पन्ने में क्या हो जाए, किस साइड में क्या हो, किस माथे मंगल और किसके राहू पता नहीं।

दाज्यू, प्रचार-प्रसार का जोर इतना ज्यादा हो चुका है कि साइबर ठग खुलकर नंग्योई कर रहे हैं। अब चालान के नाम पर भी ठगी होने लगी है। वट्सएप पर एपीके फाइल के साथ सन्देश भेज रहे हैं और डाउनलोड करते ही बैंक खाते से रकम गायब कर लेते हैं। ऐसे गुण्डे तो बड़े पदों पर बैठे लोगों को भी लोभ लालच देकर या डरा कर अपने जाल में फंसा लेने वाले ठैरे। दाज्यू, सावधान रहने के काम हैं। खटीमा के अमाऊं क्षेत्र में एक बालक को फेसबुक मेसेंजर से किसी बालिका ने चेट किया बल। उसके बाद वीडियो कॉल की ओर अश्लील वीडियो वायरल की धमकी देते हुए 17 लाख ठग लिये। परेशान बालक ने अब पुलिस की शरण ली है।

दाज्यू, किस-किस की कहें। आपने देख ही लिया कि प्रदेशभर के शिक्षको पदोन्नति और तबादलों में देरी का गुस्सा देहरादून आकर दिखाया। मुख्यमंत्री आवास के बाहर प्रदर्शन हुआ। बबली मैडम कह रही थी- 'लौटते समय खूब पिकनिक की।' दाज्यू, सरकारी नौकरी का सौदागर मास्टरमाइण्ड हाकम सिंह फिर से गिरफ्तार हो गया। जाँच वाले बात रहे है। कि वह यूकेएसएससी की स्नातक स्तरीय परीक्षा के लिये 6 अभ्यर्थियों से 12 से 15 लाख रुपये लेने की फिराक में था। दाज्यू, अब किसी भी बात में हैरानी नहीं होती है क्योंकि सबकुछ हो ही रहा है और फटफट पकड़-धकड़ भी चल ही रही है। बहुत तेजी में है ये दुनिया।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

ये क्या माजरा है...

बीडीसी ताकुला की 5 साल कार्यकाल में मात्र 3 बैठकें

अल्मोड़ा/सोमेश्वर। पंचायतीराज एक्ट में निहित प्राविधान के विपरीत क्षेत्र पंचायत समिति ताकुला की पिछले पाँच साल के कार्यकाल में मात्र तीन बैठक हुई हैं। लोक सूचना अधिकार अधिनियम के तहत मिली इस सूचना से स्पष्ट हुआ है कि क्षेत्र पंचायत ताकुला में पंचायतीराज अधिनियम का उल्लंघन होने के साथ ही विकास से सम्बन्धित कार्ययोजनाओं के सम्पादन में खुली मनमानी हुई है।

ग्राम सूपाकोट निवासी सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे द्वारा 12 जून को ताकुला ब्लॉक के लोक सूचना अधिकारी को आवेदन भेजकर गत क्षेत्र पंचायत समिति के 5 साल के कार्यकाल में सम्पन्न कुल बैठकों के कार्यवृत की सूचना मांगी गई थी इसके अलावा अप्रैल 2020 से मार्च 2025 तक राज्य सेक्टर केन्द्र सेक्टर , जिला योजना, सांसद निधि, विधायक निधि, राज्यसभा सांसद निधि सहित अन्य मदों में स्वीकृत योजनाओं की सूची, योजनावार धनराशि के सापेक्ष व्यय एवं अद्यावधिक प्रगति की सूचना भी मांगी थी।

लोक सूचना अधिकारी/ खण्ड विकास अधिकारी खजान चन्द्र जोशी द्वारा आवेदक को पत्र भेजकर 574 पृष्ठ की उक्त सूचना के लिए 1148 रुपये अतिरिक्त शुल्क जमा करने को कहा गया। शुल्क प्राप्त होने पर 13 अगस्त को उक्त सूचना भेजी गई।

पाँच साल के कार्यकाल में प्रमुख श्रीमती मीनाक्षी आर्या की अध्यक्षता में सम्पन्न क्षेत्र पंचायत समिति की कुल 3 बैठको में से पहली बैठक 4 मार्च 2020, दूसरी 4 जून 2024 एवं तीसरी 30 जुलाई 2024 को हुई।

पहली बैठक के कार्यवृत में सदस्यों के स्तर से उठाई गई अपने अपने क्षेत्र की समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा दिये गये

वक्तव्य का उल्लेख किया गया है। इसके अलावा इस बैठक में नियोजन एवं विकास समिति, शिक्षा समिति, निर्माण कार्य समिति, स्वास्थ्य एवं कल्याण समिति, प्रशासनिक समिति एवं जल प्रबन्धन समिति सहित कुल 6 समितियों का गठन किये जाने का उल्लेख है।

चार साल बाद सम्पन्न क्षेत्र पंचायत की दूसरी बैठक के पहले प्रस्ताव में पूर्व में गठित क्षेत्र पंचायत समितियों में बिना किसी कारण का उल्लेख किये परिवर्तन कर दिया गया।

अन्य प्रस्ताव में 15 वां वित्त एवं पंचम राज्य वित्त वर्ष 2024-25 में प्राप्त होने वाली राशि से कुल 88 लाख की 66 कार्ययोजनाओं का चयन किया गया।

क्षेत्र पंचायत की तीसरी बैठक के कार्यवृत के अनुसार राज्य वित्त के अन्तर्गत 2023-24 की अवशेष राशि एवं 2024-25 में प्रथम किश्त से 20 लाख की लागत से 15 कार्ययोजनाओं का चयन किया गया।

सेवानिवृत्त सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी रमेश चन्द्र पाण्डे के अनुसार 7 अप्रैल 2016 को जारी पंचायतीराज अधिनियम की धारा 66 में स्पष्ट प्रावधान है कि कार्य सम्पादन के लिए त्रैमासिक आधार पर क्षेत्र पंचायत की न्यूनतम चार बैठकें होंगी। इस हिसाब से पाँच साल के कार्यकाल में न्यूनतम 20 बैठक होनी थी। श्री पाण्डे ने बताया कि क्षेत्र पंचायत के पाँच साल के कार्यकाल में कुल स्वीकृत योजनाओं की धनराशि के सापेक्ष व्यय एवं अद्यावधिक प्रगति की सूचना के रुप में कार्य पंजिका की प्रति उपलब्ध कराई गई है। क्षेत्र पंचायत की बैठक हुए बिना कार्य पंजिका में उल्लिखित योजनाओं के निर्माण कार्य के एवज में करोड़ो की राशि के भुगतान पर भी गम्भीर सवाल उठ रहे हैं। वास्तविक स्थिति को जानने के लिए प्राप्त सूचना का अध्ययन के साथ ही कुछ और सूचनाएं भी मांगी जा रही हैं। फिलहाल यह तो स्पष्ट हो चुका है कि क्षेत्र पंचायत में पंचायतीराज एक्ट का उल्लंघन हुआ है और विकास से सम्बन्धित कार्ययोजनाओं में पीक एण्ड चूज की नीति अपनाते हुए खुली मनमानी हुई है। उल्लेखनीय है कि क्षेत्र पंचायत ताकुला के अन्तर्गत 7 न्याय पंचायत और 89 ग्राम पंचायत हैं तथा 37 क्षेत्र पंचायत सदस्य हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

वैज्ञानिक विचार

पहाड़ों पर बेतहाशा निर्माण पर उठाए सवाल

डॉ. हरीश चन्द्र अन्डोला

देवभूमि उत्तराखण्ड अब आपदाओं की भूमि बन चुकी है। बारिश, भूस्खलन, बादल फटना, नदी का रुख बदल जाना अब ये आम हो गया है। हर मानसून एक गाँव बहा ले जाता है, हर बरसात किसी के घर उजाड़ जाती है, और हर बारिश एक नई लाश गिनती है। लेकिन इसके बावजूद सरकारें चुप हैं, योजनाएं गूंगी हैं और जनता बेबस। जिसे हम विकास कहते हैं, दरअसल वह विनाश का दूसरा नाम बन चुका है। पहाड़ों पर सड़कें बनाने के लिए डायनामाइट से विस्फोट किए जाते हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई होती है। पूरी की पूरी पर्वत श्रृंखलाएं काटी जाती हैं, ताकि टनल बने, चौड़ी सड़कें बनें, जल परियोजनाएं बनें। लेकिन ये सब किस कीमत पर? प्रकृति की शान्ति और सन्तुलन को तोड़कर हम क्या हासिल कर रहे हैं? जो सड़कें सुरक्षा लानी चाहिए थी, वे अब मौत की राह बन गई हैं। जो टनल सुगमता का वादा करती थी, वे अब आपदा का द्वार बन चुकी हैं। पर्यटन के नाम पर उत्तराखण्ड का जिस तरह से दोहन किया जा रहा है वह अभूतपूर्व है। सैकड़ों गाड़ियाँ, हजारों पर्यटक, प्लास्टिक का पहाड़, ट्रैफिक की कतारें यह सब मिलकर उत्तराखण्ड के पर्यावरण पर ऐसा बोझ डाल रहे हैं, जिसे अब पहाड़ सह नहीं पा रहे। कभी यहाँ गर्मियों में पंखा नहीं चलता था, अब अक्टूबर में भी लोग एसी चला रहे हैं। यह सिर्फ जलवायु परिवर्तन नहीं, यह चेतावनी है कि हमने अपनी सीमाएं पार कर दी हैं। बाहरी लोग भारी संख्या में आकर जमीनें खरीद रहे हैं, घर बना रहे हैं, कालोनियां उगा रहे हैं। स्थानीय लोगों की जमीनें औने-पौने दामों में छीनी जा रही हैं। संस्कृति खतरे में है, भाषा गुम हो रही है और पहचान मिट रही है।

उत्तराखण्ड अब उत्तर-हाउसिंग प्रोजेक्ट बन चुका है। जो भूमि कभी साधु-सन्तों की थी, अब रियल एस्टेट माफिया की गिरफ्त में है और सरकारें बस तमाशबीन बनी बैठी हैं। दिल्ली से उत्तराखण्ड तक एक्सप्रेसवे बनने वाला है। इस पर कोई गर्व महसूस कर सकता है लेकिन जो लोग उत्तराखण्ड की आत्मा को जानते हैं, उन्हें पता है कि यह सड़क उस दरवाजे की आखिरी कड़ी होगी जो शान्ति की ओर जाता था। यह मार्ग विकास के नाम पर उत्तराखण्ड की आत्महत्या की कहानी बन जाएगा।

अभी तो वीकेंड में ही दिल्ली से हजारों लोग आते हैं, सोचिए जब यह सड़क पूरी होगी और हर दिन लाखों की भीड़ पहाड़ों पर चढ़ेगी तब क्या बचेगा यहाँ? विनाश का यह सिलसिला नियमों की कमी से नहीं, नियत की कमी से है। पर्यावरणीय रिपोर्टें बस एक औपचारिकता बन चुकी हैं। परियोजनाओं को मंजूरी देने वाले अधिकारी जानते हैं कि उनका हर हस्ताक्षर एक पेड़ को मार रहा है, एक चट्टान को कमजोर कर रहा है, एक गाँव को डुबो रहा है लेकिन धन, पद और प्रभाव के आगे ये सारी चेतावनियां बेअसर हो जाती हैं। इसीलिए तो आज स्थिति यह है कि हिमालय जैसा अचल पर्वत भी थरथराने लगा है। यह केवल प्राकृतिक संकट नहीं, यह हमारी नैतिक विफलता भी है। हमने न सिर्फ पेड़ काटे, बल्कि भरोसे भी काट डाले। नदियों की धारा मोड़ी, तो साथ में भविष्य भी मोड़ दिया। हम भूल गए कि हिमालय सिर्फ बर्फ से नहीं बना, वह आस्था से बना है, सन्तुलन से बना है और इस सन्तुलन को तोड़ने की हमारी कोशिश अब हर बरसात में लाशों की गिनती बढ़ाकर जवाब दे रही है। समाधान कठिन है पर असम्भव नहीं। हमें तत्काल प्रभाव से नई निर्माण परियोजनाओं पर रोक लगानी होगी। पहाड़ों की सहनशीलता को विज्ञान से नहीं, विवेक से समझना होगा। पर्यटन को सीमित करना होगा उसके लिए जैसी अवधारणाओं को गम्भीरता से लागू करना होगा। पर्यटकों की संख्या तय हो, वाहनों की सीमा तय हो, और सबसे जरूरी स्थानीय लोगों की भागीदारी के बिना कोई भी निर्णय न लिया जाए। आपदा का दंश झेल रहे उत्तराखण्ड की नजरें अब इससे उबरने को केन्द्रीय मदद पर टिक गई हैं। राज्य की ओर से 5700 करोड़ रुपये की क्षतिपूर्ति का प्रस्ताव केन्द्र को भेजा गया है। इसी कड़ी में केन्द्रीय अन्तर मंत्रालय टीम राज्य के आपदा प्रभावित क्षेत्रों में क्षति के आकलन में जुटी है। जमीन की खरीद-फरोख्त पर रोक लगानी होगी। यह जरूरी है कि कोई बाहरी व्यक्ति पहाड़ में जमीन खरीदने से पहले उस भूमि की संस्कृति और पारिस्थितिकी को समझे। नहीं तो वह सिर्फ एक नया खतरा लेकर आएगा। शिक्षा के स्तर पर हमें जलवायु संकट और पर्यावरणीय जागरूकता को स्कूलों से जोड़ना होगा। बच्चों को यह सिखाना होगा कि पेड़ सिर्फ आक्सीजन नहीं देते, वे पहाड़ों को थामे रहते हैं। नदी सिर्फ पानी नहीं देती, वह जीवन देती है। चट्टानें सिर्फ पत्थर नहीं होती, वे इतिहास, भूगोल और संस्कृति की नींव होती हैं। अगर अब भी हम नहीं रुके तो अगली बार यह हादसा किसी और गाँव में नहीं, आपके दरवाजे पर दस्तक देगा। दिल्ली, देहरादून, हल्द्वानी, मसूरी कोई सुरक्षित नहीं बचेगा। उत्तराखण्ड सिर्फ एक राज्य नहीं, वह एक चेतना है। उसे बचाना केवल स्थानीय लोगों की जिम्मेदारी नहीं, यह पूरे देश की जिम्मेदारी है। सरकारों को अब सिर्फ घोषणाएं नहीं, कठोर और साहसी निर्णय लेने होंगे। वरना वह दिन दूर नहीं जब उत्तराखण्ड का हर गाँव एक थराली बन जाएगा और फिर हम सिर्फ शोक सभा कर पाएंगे, समाधान नहीं। आज समय है संकल्प लेने का। समय है यह स्वीकार करने का कि हमने गलती की है और समय है उसे सुधारने का। अगर अभी नहीं चेते तो हम इतिहास में दर्ज हो जाएंगे उन लोगों के रूप में, जिन्होंने देवभूमि को विनाशभूमि बना दिया। साल 2013 के केदारनाथ आपदा के बाद सुप्रीम कोर्ट की ओर से गठित विशेषज्ञ समिति ने बताया था कि उच्च हिमालयी घाटियां भूस्खलन और मलबा प्रवाह प्रभुत्व वाली अचानक बाढ़ों की चपेट में आ सकती हैं। इस समिति ने सिफारिश की थी कि उच्च हिमालयी घाटियों में भगीरथी पर्यावरण-सम्वेदनशील क्षेत्र (बीएसजेड) जैसे पर्यावरण-सम्वेदनशील क्षेत्रों का चिन्हांकन किया जाना चाहिए। इससे उच्च हिमालयी घाटियों में मानवजनित हस्तक्षेप को न्यूनतम किया जा सकेगा। समिति ने सुझाव दिया था कि नदियों को मानवजनित अतिक्रमण और जलबिजली बैराज से मुक्त रखा जाना चाहिए ताकि बाढ़ के दौरान नदी बिना किसी रुकावट के बह सके। उनका कहना है कि इन सिफारिशों को गम्भीरता से नहीं लिया गया। इसके बजाय निर्माण सामग्री, लकड़ी या जमीन का अत्यधिक दोहन किया गया। उत्तराखण्ड में लगातार बढ़ती प्राकृतिक आपदाएं केवल पर्यावरणीय घटनाएं नहीं हैं, अपितु वे हमारे विकास मॉडल, नीति-निर्धारण एवं प्रकृति के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पर गहरे प्रश्नचिन्ह खड़ा करती हैं। भूस्खलन, बाढ़, बादल फटना, वनाग्नि और भू-धंसाव जैसी घटनाएँ न केवल राज्य की पारिस्थितिकी को, बल्कि उसकी सामाजिक और आर्थिक संरचना को भी गम्भीर रूप से प्रभावित कर रही हैं। यह स्पष्ट है कि जलवायु परिवर्तन तथा मानवीय हस्तक्षेप की संयुक्त परिणति ने उत्तराखण्ड को आपदा-प्रवणता की चरम सीमा तक पहुँचा दिया है। ऐसी परिस्थिति में मात्र तात्कालिक राहत उपाय पर्याप्त नहीं हैं। आवश्यकता है एक दीर्घकालिक, पर्यावरण-सम्वेदी और समुदाय-आधारित नीति ख्रष्टिकोण की, जो विकास को प्रकृति के साथ सहअस्तित्व के रूप में पुनर्परिभाषित करे। इस दृष्टिकोण में सतत विकास, पारम्परिक ज्ञान, स्थानीय भागीदारी और वैज्ञानिक विवेक का सन्तुलन अनिवार्य है। उत्तराखण्ड की जैवविविधता, सांस्कृतिक धरोहर और सम्वेदनशील पारिस्थितिकी की रक्षा हेतु यह अत्यावश्यक है कि हम अब सजग होकर ठोस कार्यवाही करें। अतः राज्य सरकार, वैज्ञानिक संस्थान, गैर-सरकारी संगठन और स्थानीय समुदायों को मिलकर एक साझा, समावेशी और पर्यावरणोन्मुख दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। जब तक विकास को 'प्रकृति-विरोधी लाभ' के बजाय 'प्रकृति-संगत जीवन' के रूप में पुनर्परिभाषित नहीं किया जाएगा, तब तक उत्तराखण्ड की आपदाएं निरन्तर तीव्र होती रहेंगी। यही समय है जब हमें चेतने, सीखने और ठोस बदलाव लाने की दिशा में कदम बढ़ाने होंगे। अन्यथा वह समय दूर नहीं जब देवभूमि की पहचान केवल त्रासदियों और आपदाओं तक सीमित होकर रह जाएगी। हमें अब प्रकृति के अनुरूप विकास की राह अपनाने का सार्थक संकल्प लेना होगा, इसी में उत्तराखण्ड की दीर्घकालिक सुरक्षा और समृद्धि निहित है।

ज्योतिष की बातें- 248

3 अक्टूबर 2025 को बुध मित्रराशि तुला में प्रवेश करेगा। 3 अक्टूबर को ही बुध पश्चिम दिशा में उदय भी हो जाएगा जिस पर गुरु की शुभ दृष्टि भी पड़ेगी। अतः इस समय बुध अत्यन्त बली एवं शुभ हो रहा है। फलदीपिका के अनुसार बुध 2, 4, 6, 8, 10 व 11 वें स्थान पर शुभ फल प्रदान करता है। अतः अगले 21 दिन बुद्धि, स्मरण शक्ति, व्यापार, वाणिज्य, गणित, लेखन कार्य, लेखन सामग्री, संचार माध्यम आदि के क्षेत्रों में कन्या, कर्क, वृषभ, मीन, मकर व धनु राशि के जातकों को बुध अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। अन्य राशियों के लिए भी सामान्य शुभ रहेगा।

यह अत्यन्त स्थूल गोचर फल है, व्यक्ति विशेष के लिए सूक्ष्म विश्लेषण उसकी जन्मकुण्डली आदि पर निर्भर करता है।

दुर्गा विसर्जन- नौ दिन दुर्गा जी का पूजन-अर्चन करने के बाद आश्विन शुक्लपक्ष दशमी तिथि में प्रातःकाल दुर्गा विसर्जन किया जाता है। तदनुसार बृहस्पतिवार 2 अक्टूबर 2025 को विधिपूर्वक दुर्गा विसर्जन किया जाएगा।

विजयादशमी- आश्विन शुक्लपक्ष की अपराह्न व्यापिनी, यथासमम्भव श्रवणयुता, दशमी तिथि में विजयादशमी अर्थात् दशहरा का पर्व मनाया जाता है। अतः बृहस्पतिवार 2 अक्टूबर 2025 को विजयादशमी का पर्व उल्लासपूर्वक मनाया जाएगा ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 138

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

आजकल सभी जगह कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसिया का बहुत उपयोग हो रहा है। मोबाइल में, लैपटॉप में, फेसबुक पर, व्हाट्सएप पर, इंस्टाग्राम पर, मैसेंजर पर, कारखाने में, कम्पनी में, आफिस में, स्कूल कालेजों में, शिक्षा में, मेडिकल में, ऑपरेशन में, वकालात में, कोर्ट में, जजमेंट में, आपसी विवाद में अथवा किसी प्रकार के निर्णय पर पहुँचने में सभी जगह इस नई टेक्नोलॉजी एआई का प्रयोग हो रहा है। इसके द्वारा कुछ भी किया जा सकता है और कुछ का कुछ भी बनाया जा सकता है।

किसी के धड़ पर सिर किसी और का लगाया जा सकता है। यदि सिर उसी का है तो आवाज किसी और की जोड़ी जा सकती है। यदि धड़, सिर और आवाज भी उसक व्यक्ति की है तो शब्द एआई की सहायता से किसी और के भी जोड़े जा सकते हैं। इसलिए कब, कहाँ, किसने, क्या कहा, इस पर कोई भरोसा नहीं किया जा सकता। फोटो में किसी को कपड़े पहनाए जा सकते हैं तो कपड़े उतारे भी जा सकते हैं। इस कारण कोई भी फोटो या वीडियो देखकर उस पर भरोसा नहीं करना चाहिए। यदि माता को किसी अन्य पुरुष के साथ या पिता को किसी अन्य महिला के साथ मोबाइल में आप देख लें तो उसे सच मत मान लेना क्योंकि वह बदनाम करने के लिए एआई जेनरेटेड हो सकता है। बेटे को किसी फोटो में सिगरेट पीते देख लेते हैं तो उसे मारना मत क्योंकि वह झूठ हो सकता है। बेटी का कोई अर्धनग्न अवस्था का चित्र सोशल मीडिया में दिखाई पड़ जाए तो दुःखी मत होना क्योंकि किसी परिचित के द्वारा वह एआई जनरेटिड हो सकता है।

इस एआई के कारण अब कहीं कोई भरोसा नहीं रहा। इस नई टेक्नोलॉजी का सदुपयोग तो दूर की बात है दुरुपयोग तो अभी व्यापक हो चुका है। इसलिये हमें सदैव सावधान रहना चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

रामलीला मंचन

शारदीय नवरात्र के दिनों में जगह-जगह रामलीला मंचन जारी है। पहाड़ में होने वाली परम्परागत गेयनाट्य रामलीला का मंचन देखने के लिये दर्शकों की खासा भीड़ जुट रही है। सांस्कृतिक नगरी अल्मोड़ा सहित सभी जगहों से इस प्रकार के समाचार हैं।

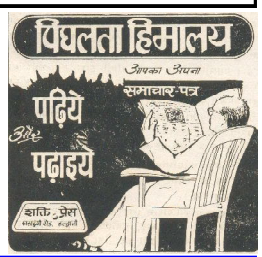

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

शिकायत के बाद भी परिणाम जारी नहीं

देहरादून। आयुर्वेदिक विवि से सम्बद्ध संस्थानों की ओर से एक साल से ज्यादा समय बीत जाने के बाद भी बीएएमएस 2021 बैच का परिणाम जारी नहीं किया गया है। छात्रों ने इसकी शिकायत सीएम पोर्टल पर करते हुए रोष जताया है। कहा कि परिणाम न आने से वह आगे की पढ़ाई करने में परेशान हो चुके हैं।

गोल्डन कार्ड की दरों से भड़के

अल्मोड़ा। गवर्नमेंट वेलफेयर ऑर्गनाइजेशन जिला शाखा की मासिक बैठक में गोल्डन कार्ड की दरों में वृद्धि के प्रस्ताव को पूरी तरह गलत बताया। हेमचन्द्र जोशी की अध्यक्षता में हुई बैठक में सदस्यों ने राशि वसूली अवधि को 10 वर्ष 11 माह करने, 65, 70 और 75 वर्ष की आयु पर पेंशन में 5-5 प्रतिशत वृद्धि करने, चिकित्सा प्रतिपूर्ति देय का शीघ्र भुगतान करने की मांग उठाई।

चम्पावत का 29वां स्थापना दिवस

चम्पावत। जनपद चम्पावत का 29वां स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। 1997 में पिथौरागढ़ से पृथक कर चम्पावत जिले का निर्माण किया गया था। इस अवसर पर जिला सभागार में हुई गोष्ठी में पूर्व सूचना आयुक्त अनिल पुनेठा ने कहा कि जिले का एक विजन डाक्यूमेंट तैार कर उस पर आधारित कार्ययोजना बनानी होगी।

चल्मोड़ी में 15 परिवार शिफ्ट

थल। चल्मोड़ी गाँव में जमीन दरकने के बाद भूस्खलन से मलबा आने पर खतरा बढ़ चुका है। ऐसे में गाँव के 15 परिवारों को पड़ोसियों के वहाँ शिफ्ट किया गया है। प्रभारी नायब तहसीलदार प्रकाश कापड़ी ने टीम के साथ क्षेत्र का दौरा करते हुए उच्चाधिकारियों को सूचित किया।

बिलाड़ पट्टी खतरे में आवाजाही

गंगोलीहाट। विकासखण्ड के कसेड़ी, सिरोली, बालातड़ी, कमद, डोबालखेत, पैनापानी गाँव को जोड़ने वाली बघर डोबालखेत सडक कटे 12 साल हो गए हैं लेकिन इसमें अभी तक डामरीकरण नहीं हुआ है और बिलाड़ पट्टी के लोग खतरे में आवाजाही को मजबूर हैं। लोनिवि के जेई का कहना है कि सड़क को पीएमजीएसवाई को हस्तान्तरित करने की कार्रवाई चल रही है।

शीघ्र अतिक्रमण हटाएं अन्यथा कार्रवाई होगी

हल्द्वानी। प्रशासन एवं नगर निगम की संयुक्त टीम ने नरिमन तिराहा से गौला पुल मार्ग का निरीक्षण करते हुए सड़की के दोनों ओर से अतिक्रमण हटा लेने को कहा है अन्यथा प्रशासनिक कार्रवाई होगी। इस मार्ग पर मरम्मत का कार्य भी होना है।

इस बार खूब रुलाया इस आपदा ने

देहरादून में भारी नुकसान कर दिया नदी उफान ने

टपकेश्वर में पुल और शिव मूर्ति बह गई

टोंस में आया सैलाब और बह गये मजदूर

ऋषिकेश, विकासनगर में भारी तबाही

मौसम बदला है लेकिन बीच-बीच में बरसात के झटकों के साथ हुए भूस्खलन ने उत्तराखण्ड में चारों ओर परेशानी खड़ी कर दी है। इस बार आपदा ने खूब रुलाया है। देहरादून घाटी तक आपदा से घिर गई और नदी उफान से भारी नुकसान के घाव अभी ताजे हैं। दून घाटी में आपदा से दो दर्जन मौत और इतने ही लापता होने की सूचना है। आपदा के घाव ऋषिकेश और विकास नगर में भी हैं, जहाँ भारी तबाही हुई। मालदेवता से लेकर नन्दा चौकी तक और शिखर फाल से लेकर लालतप्पड़ तक काफी नुकसान हुआ है। शिवालिक की पहाड़ियों से आने वाला पानी शहर के अन्दर और बाहरी क्षेत्रों में करीब दर्जनभर नदियों में काल बनकर प्रभावित हुआ। भयंकर बारिश से पेयजल लाइन, विद्युत पोल उखड़ने के साथ ही गैस पाइपलाइन टूट गई। हालत इतने खराब थे कि दो दिन तक मसूरी से दून का सम्पर्क कटा रहा।

प्रदेश की राजधानी दून में महत्वपूर्ण क्षेत्र सहस्त्रधारा में तक अफरा-तफरी मची। मौसम की मार के बीच झील टूटने की अफवाह फैलने से लोग बेचैन हो उठे। इलाके में ऊपर बसे गाँव मजाड़ा, चामासारी, जमाड़ा में बादल फटने से मची तबाही के बाद लोग अपने बच्चों को लेकर इधर-उधर भागे। यहाँ बाढ़ में होटल-रेस्टोरेंट बह गये। पीड़ितों के आगे फिर से रोजगार की समस्या भी प्रमुख है। सहस्त्रधारा में कई वर्षों का रिकार्ड तोड़ती बारिश पर मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि ईस्टरली वेस्टरली वेदर सिस्टम से प्रदेश में मूसला धार बारिश हो रही है। दूसरी ओर अतिवृष्टि से नदियों का रौद्र रूप देखने को मिला। टपकेश्वर में माता वैष्णों देवी गुफा को जोड़ने वाला पुल बह गया। पानी तेज बहाव में शिव की मूर्ति तक बह गई ओर मन्दिर परिसर में मलबा जमा हो गया। मन्दिर में फंसे लोगों को रस्सी के सहारे निकाला गया। दून घाटी की नदियों में इतना भयंकर प्रवाह देखने वाले अभी तक सोचकर भी कांप जाते हैं। टोंस नदी पर ट्रैक्टर ट्रोली समेत 15 मजदूर बह गये। इनके परिवार में कोहराम मच गया। यहीं काम करने वाले मजदूरों को पता नहीं था कि अचानक पानी का सैलाब काल बनकर आ रहा है और किसी को भी संभलने का अवसर नहीं मिला। इनमें से दो मजदूर झाड़ियों में फंसकर बच गये। डीआईटी कालेज के पास पीजी की दीवार गिरने से हापुड़ निवासी छात्र की मौत हो गई। दीवार टूटते ही छात्र बह चुका था, एसडीआरएफ ने रेस्क्यू अभियान चलाकर शव बरामद किया। प्रेमनगर क्षेत्र में इतना खतरनाक दृश्य लोगों ने पहली बार देखा होगा। पौंधा स्थित देवभूमि इंस्टीट्यूट परिसर में जलभराव से 200 छात्र-छात्राएं फंस गये थे जिन्हें रेस्क्यू कर सुरक्षित निकाला गया।

नैनीताल जिले में भी नुकसान अथाह

गौला की बहाव से भूमि कटाव

वजून में मलबा ही मलबा, मवेशी दफन

कोटाबाग में नाला उफनाया, मौत

आपदा ने पूरे प्रदेश को रुलाया है लेकिन यहाँ पर नैनीताल जिले की बात मुख्य रूप से इसलिये की जा रही है क्योंकि अक्सर यह माना जाता है कि इसके शहरी क्षेत्र सुरक्षित हैं और पहाड़ में भी आसान लेकिन ऐसा नहीं है। जिस तरह से नदी नालों का रौद्र रूप दिखाई दिया है उससे साफ है कि कई इलाके खतरे में हैं। इनसे बचने का तरीका सिर्फ यही है कि इन पर अतिक्रमण न किया जाए और प्रकृति से छेड़छाड़ न हो। गौला/गार्गी नदी के बहाव में हल्द्वानी, लालकुआ, बिन्दुखत्ता सभी जगह भूमि कटाव हुआ है। हल्द्वानी शहर के नालों का खतरा तो भविष्य के लिये भी चेतावनी के रूप में है। कोटाबाग में नाले के उफनाने से पतलिया निवासी दीपू कन्याल की मौत हो गई। इनकी बोलेरो बहने लगी थी तभी दीपू छिटक कर नाले में बहने लगा। कमोला हेड पर उसका शव मिला। पुल न होने से यहाँ पहले से खतरा है।

नैनीताल के वजून के दूधिला तोक में भूस्खलन से मलबा ही मलबा हो चुका है। यहाँ भूपाल सिंह ढैला, हरेन्द्र सिंह ढैला व पूरन सिंह का परिवार पहले ही शिफ्ट कर चुका है। मलबे से भूपाल सिंह का मकान, व खेतों को नुकसान हुआ। मवेशी भी मलबे में दफन हो गये।

चमोली के नन्दानगर में भारी तबाही

बिनसर पहाड़ी की चोटी पर बादल फटा

महत्वपूर्ण मोटरमार्ग और पुल क्षतिग्रस्त

गोपेश्वर। चमोली के नन्दानगर में भयंकर मलबे ने तबाही मचा कर रख दी। अति वृष्टि के बाद भूस्खलन से 45 से ज्यादा मकान, दुकान, गौशालाएं दब गईं। इस आपदा में 7 लोगों की मौत और दस लोग लापता बताए जा रहे हैं। बिनसर की पहाड़ी पर बिजली कड़कने के के बाद जिस हिसाब से मलबा फूटा वह तीन ग्रामों में काल बनकर टूटा। फाली लगा कुंतरी व सैंती लगा कुंतरी ग्राम में रात के समय यह कोहराम मचा। कुंतरी, सरपाणी, धुर्मा, मोख में भवन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गये। क्षेत्र में आपदा के बाद राहत और बचाव कार्य में घायलों को हेलीकॉप्टर से हायर सेन्टर भेजा गया।

नन्दानगर में आपदा की निशान डरावने हैं। आवासीय भवनों की टूटफूट के अलावा कृषि भूमि को नुकसान हुआ है। आपदा से कई महत्वपूर्ण मोटरमार्ग और पुल क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। नन्दानगर के बस स्टेशन से पुराने बाजार को जोड़ने वाला लोहे का पुल भी टूट चुका है।

बादल फटने और भारी भूस्खलन के पीछे दक्षिण-पूर्वी हवाओं का कहर माना जा रहा है। जानकारों का कहना है कि दक्षिण-पूर्वी हवाएं लगातार हिमालयी क्षेत्र से टकरा रही हैं। बंगाल की खाड़ी से चलने वाली नम हवाएं उत्तराखण्ड में बादल फटने का कारण बना रही हैं।

आदिकैलास यात्री जुटे, ऊँ पर्वत उभरा

धारचूला/टनकपुर। टनकपुर-तवाघाट हाईवे और तवाघाट-लिपुलेख मार्ग यातायात के लिये खुलते ही यात्री जुट चुके। इन मार्गों के खुलने से आदि कैलास, ऊं पर्वत यात्रा निर्बाध रूप से चल रही है। इससे पहले अतिवृष्टि से अधिकांश मार्ग बन्द होने से यात्रियों के दल यत्र-तत्र फंस चुके थे और जरूरी सामान तक की आपूर्ति नहीं हो पा रही थी। अभी भी कुछ मार्गों पर अवरोध हैं लेकिन यात्रा का रास्ता बन चुका है।

मानसून काल में ओम पर्वत में बर्फ पिघलने से गायब हुई आकृति फिर से उभर चुकी है। आदि कैलास, ओम पर्वत यात्रा के दूसरे चरण के आरम्भ होते ही बर्फ की आकृति दिखने से श्रद्धालुओं सहित स्थानीय लोगों में खुशी है। ओम पर्वत यात्रा का दूसरा चरण 16 सितम्बर से आरम्भ हुआ था। मार्ग बन्द होने के कारण यात्री 17 को रवाना हुए। अब जबकि दूसरे चरण की यात्रा समयावधि पर उच्चहिमालय में हिमपात के बाद ऊँ पर्वत की आकृति उभरने का आलौकिक नजारा लुभाने लगा है।

पर्यटन आईसीआरटी सिल्वर अवार्ड

देहरादून। पर्यटन विभाग को आईसीआरटी भारत-उपमहाद्वीप सिल्वर अवार्ड मिला है। दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में पर्यटन मंत्री सतपाल महाराज ने कहा कि पर्यटन का विकास प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण होना चाहिये। कहा कि प्रदेश के पर्यटन बोर्ड को इस सम्मान सूची में शामिल किया जाना हमारे लिये गर्व का विषय नहीं बल्कि हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

आवास विभाग ने जारी की एसओपी

देहरादून। प्रदेश में अब पूर्व मान्य नक्शों (प्री एप्रूव्ड मैप) से मकान बनाने वालों को भी आर्किटेक्ट की जरूरत होगी। उनके मकान आर्किटेक्ट के पर्यवेक्षण में बनेंगे, जिसके लिए आवास विभाग ने एसओपी जारी की है। विभाग ने आमजन की सुविधा के लये 815 प्री एप्रूव्ड नक्शे तैयार कर ई ऐप पर अपलोड किए हैं ताकि जो लोग शुल्क वहन नहीं कर सकते वह इसकी मदद ले सकेंगे।

परिक्रमा

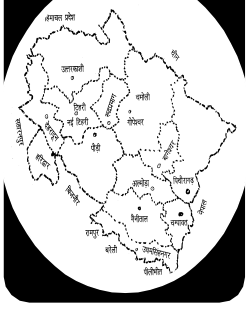

मनसा देवी की पहाड़ी पर भूस्खलन

हरिद्वार। शिवालिक पर्वतमाल पर इस बार आपदा का कहर है। मनसा देवी की पहाड़ी पर करीब 300 मीटर क्षेत्र में भारी भूस्खलन से बाइपास की सड़क पर दरारें पड़ गई हैं। इससे तलहटी पर बसी दो बस्तियों के सैकड़ों परिवारों और हरिद्वार देहरादून-ऋषिकेश रेलवे लाइन सहित हरकीपैड़ी पर भी खतरा मंडराने लगा है। निरीक्षण कर रही टीम ने पाया है कि छह किमी के दायरे में 11 भूस्खलन जोन पुराने और चार नए भूस्खलन जोन बन गए हैं।

धौलकटिया गाँव में भारी नुकसान

बेरीनाग। अतिवृष्टि व भूस्खलन से तहसील मुख्यालय के धौलकटिया गाँव में भारी नुकसान हुआ है। क्षेत्र में सैकड़ों नाली कृषि भूमि, फल, साग सब्जी, मछली तालाब, पानी टैंक, पेयजल स्रोतों को काफी नुकसान हुआ। चार मकानों को खतरा बना हुआ है। एसडीएम के निर्देश पर राजस्व टीम ने गाँव पहुँचकर क्षति का आंकलन किया। क्षेत्रवासियों ने उचित मुआवजे की मांग की है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

सत्यवती को जाना...

प्रथम पृष्ठ का शेष

पेट चीरा गया तो उसमें से एक पुरुष के साथ-साथ (सत्यवती नामक) एक मत्स्यकन्या का जन्म हुआ, जिसकी गन्ध दूर-दूर तक फैलती थी और इस कारण उसे मत्स्यमन्या कहा गया।

जैसा कि अब तक काफी स्पष्ट हो चुका है, सूर्या सावित्री द्वारा विवाह के बारे में नई परम्परा डाल देने के बावजूद अभी शर्तों से विवाह को बाँधने का पुराना रिवाज बदस्तूर जारी था। इसलिए जब शान्तनु ने दाशराज की कन्या सत्यवती से विवाह का प्रस्ताव रखा तो दाशराज ने साफ-साफ शर्त रख दी कि इस शादी की मेरी ओर से कीमत यह है कि जो भी मेरी बेटी का पुत्र होगा, वही आगे चलकर हस्तिनापुर का राजा बनेगा- राज्यशुक्ला प्रदातव्या/कन्येयं याचतांवर/ अपत्यं यद् भवेतृ तस्याः/स राजास्तु पितुः परम्।

विवाह तो हो गया। दो पुत्र पैदा हो गए- चित्रांगद और विचित्रवीर्य। पर सत्यवती के युवा होने से पहले ही शान्तनु का देहान्त हो गया और अहंकारी चित्रांगद राजा बनने के बाद चित्रांगद नाम वाले एक गन्धर्व से इसलिए युद्ध कर बैठा कि चित्रांगद नाम वाला एक ही व्यक्ति इस धरती पर हो सकता है, और इस युद्ध में वह जान से हाथ धो बैठा। सत्यवती राजकुल से नहीं आई थी, पर उस समय के भारतवर्ष के सबसे प्रतापी राजवंश कुरुकुल की पुत्रवधू बनने के बाद उसकी परीक्षा तब शुरू हुई, जब उसके सामने पतिकुल के नामशेष हो जाने का संकट आ गया। चित्रांगद की मृत्यु हो चुकी थी। भीष्म ने विवाह न करने की प्रतिज्ञा कर रखी थी। राजयक्ष्मा से पीड़ित विचित्रवीर्य सन्तान पाने में सक्षम नहीं थे। फिर विचित्रवीर्य भी चल बसे। अब क्या हो?

सत्यवती के दो पुत्र और भी थे- वेदव्यास और भीष्म। वेदव्यास तो उसके अपने गर्भ से पैदा हुए थे, जबकि भीष्म उसके उसके पति शान्तनु की पहली पत्नी गंगा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। अपने वंश के अस्तित्व पर आए संकट के निवारण के लिए सत्यवती ने पहले उसे भीष्म से अनुरोध किया, जो सत्यवती के अनुरोध पर इससे पूर्व विचित्रवीर्य के लिए अम्बा-अम्बिका-अम्बालिका का अपहरण करके ले आए थे। सत्यवती ने भीष्म से दो अनुरोध किए। हस्तिनापुर का राजा न बनने की प्रतिज्ञा के बावजूद भीष्म से सत्यवती से आपर्द्ध का विचार करते हुए राज्यग्रहण करने को कहा तो भीष्म ने साफ मना कर दिया। दूसरा अनुरोध सत्यवती ने यह किया कि कुरुवंश को आगे चलाने के लिए भीष्म ने इस अनुरोध को इस तर्क के आधार पर मना कर दिया कि उन्होंने जो विवाह न करने की प्रतिज्ञा की है, उसका यह अर्थ भी है कि वे कभी स्त्री/सहवास भी नहीं करेंगे। भीष्म से निराश होकर सत्यवती ने अपने दूसरे पुत्र वेदव्यास से (जिसका वास्तविक नाम कृष्ण द्वैपायन था) अम्बिका और अम्बालिका को सन्तानवती बनाने का अनुरोध किया। वेदव्यास ने यह अनुरोध मान लिया और इसी सन्दर्भ में धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर के जन्म की कथा हम सभी जानते हैं।

अर्थात उस समय के सबसे प्रतावी राजवंश की वह एकमात्र व्यक्ति थी, जो सम्भवतः अनौपचारिक रूप से शासिका का काम भी कर रही थी, जिसने अपनी दो विधवा पुत्रवधुओं अम्बिका और अम्बालिका के साथ पूरे राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले रखी थी। शादी-ब्याह के चटखारों में हमें यह तो याद रहा है कि शान्तनु ने उस आयु में शादी रचाई, जब उन्हें अपने पुत्र भीष्म के विवाह की चिन्ता करनी चाहिए थी और शादी भी एक ऐसी आयु की लड़की से की, जो उनके पुत्र से विवाह के योग्य थी। इसी लुत्फबाजी में हमें देवव्रत भीष्म की प्रतिज्ञा भी भली-भाँति याद रहती है, पर शान्तनु की शादी की लुत्फभरी चर्चाओं और भीष्म की प्रतिज्ञा के प्रति आदर से झुके हमारे मन को सत्यवती क्यों याद नहीं रहती है? एक ऐसी महिला, जो राजकुल तो क्या नगरजीवन की भी अभ्यस्त नहीं थी। एक ऐसी महिला, जो मछुआरों के कुल से आई थी। एक ऐसी महिला, जो भीष्म जैसे महाप्रतापी नायक को प्रतिज्ञाओं में बाँध कर आई थी और लगातार इस दबाव को और इन प्रतिज्ञाओं के कुपरिणामों को झेल ही रही होगी। कैसे नहीं झेल रही होगी? अपने बेटे को राजा बनाने की शर्त पर कुरुवंश में आई एक ऐसी महिला की कल्पना करिए, जिसका पति भी चल बसा और दो पुत्रों में से एक भी नहीं बचा। जिस राजसिंहासन को अपने पुत्र के लिए उसने आरक्षित करवा दिया था, उस सिंहासन का अस्तित्व ही अब संकटग्रस्त हो गया था और उसका कारण कहीं न कहीं सत्यवती को माना जा रहा होगा। ऐसे माहौल में ऐसी महिला ने, एक ऐसे राजवंश को बचाने के लिए उस समय की काम-परम्पराओं का सहारा लिया, यह अपने आप में कोई कम खतरे वाली बात नहीं थी। हम देख आए हैं कि उस समय की परम्पराओं में आज जैसी वर्जनाएं नहीं थीं तो तनाव भी कम नहीं थे। पर इस सब में रहते हुए सत्यवती ने जिस साहस से इन परम्पराओं को उपयोग करते हुए वंश को आगे बढ़ाया तो क्या इस बात को महत्वपूर्ण नहीं मानना चाहिए? द्रौपदी महत्वपूर्ण है, पर सत्यवती भी कम महत्वपूर्ण नहीं, शायद थोड़ा ज्यादा ही महत्वपूर्ण है, क्या इसे आँकने की जरूरत नहीं? जरूरत है, बस थोड़ा साहस करना पड़ता है। शान्तनु के लिजलिजे और भीष्म के व्रती व्यक्तियों की छायाओं से बाहर आकर सत्यवती को याद करना पड़ता है और फिर उसे पूरे फ्रेम मं फिट करके देखना पड़ता है। वैसा करें तो लगता है कि कुरुकुल की पाँच पुत्र वधुओं में सत्यवती शायद अपने ही बनाए एक अजेय शिखर पर बैठी है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

बनकटिया बेस कैम्प को घोषित किया गया है ट्रैक ऑफ द ईयर

इसे लास्पा बनकटिया नाम से उच्चारित किया जाए

पिथौरागढ़/देहरादून। प्रदेश के पर्यटन विभाग ने मल्ला जोहार स्थित बनकटिया बेस कैम्प को वर्ष 2025 का ट्रैक ऑफ द ईयर घोषित किया है। इसमें सितम्बर के अन्त से बनकटिया से लास्पा ग्लेशियर तक पर्यटकों को ट्रैकिंग कराई जाएगी।

पर्यटन विभाग की ओर से हर वर्ष अलग-अलग क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिये ट्रैक ऑफ द ईयर की घोषणा की जाती है ताकि पर्यटकों आकर्षित कर माहौल बनाया जा सके।

सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता भूपेन्द्र सिंह लस्पाल ने 'लास्पा बनकटिया' को मल्ला जोहार का ट्रैक ऑफ द ईयर बेस कैम्प घोषित करने पर खुशी जाहिर करते हुए पर्यटन विभाग की प्रशंसा की है। साथ ही सभी अपील की है कि मल्ला जोहार के प्रथम गाँव लास्पा स्थित बेस कैम्प को 'लास्पा बनकटिया' नाम से उच्चारित किया जाए। जिस तरह लास्पा ग्लेशियर को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है। ताकि हिमनगरी ज्वार-मुन्स्यार के सभी पर्वतीय पर्यटन स्थलों का बाहरी पर्यटकों को सही जानकारी मिल सके।

होम स्टे योजना का लाभ स्थायी निवासी ही ले सकेंगे : गर्ब्याल

नैनीताल। उत्तराखण्ड में पर्यटन विभाग अपनी होमस्टे योजना का लाभ केवल स्थायी निवासियों को ही देगा। प्रदेश के पर्यटन सचिव धीराज सिंह गर्ब्याल ने पत्रकार वार्ता में बताया कि केवल स्थायी निवासियों को ही योजना का लाभ मिलेगा। दूसरे प्रदेशों से आए लोगों को होम स्टे योजना का लाभ नहीं मिल सकेगा।

नन्ही परी को न्याय के लिये चारों ओर आवाज उठी

पिथौरागढ़ की नन्ही परी मामले को लेकर प्रदेश में चारों ओर आवाज उठी है। आखिर अभियुक्त को कैसे छोड़ा गया इस बात को लेकर प्रदेश में जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ है।

बच्ची के पिता और क्षेत्र के लोगों ने पत्रकार वार्ता कर काण्ड के मुख्य अभियुक्त को बरी करने के फैसले के खिलाफ सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में समय से रिव्यू पिटिशन दाखिल करने की मांग उठाई। बच्ची के पिता ने बताया काठगोदाम में एक विवाह समारोह में भाग लेने गई पिथौरागढ़ निवासी 7 वर्षीय बच्ची बच्चों के साथ खेलते हुए 20नवम्बर 2014 को लापता हो गई थीं इसके बाद 25 नवम्बर को खून से लतपथ उसका शव जंगल में बरामद हुआ। पाक्सो कोर्ट में मुख्य अभियुक्त को फांसी की सजा सुनाई थी और सह अभियुक्त को 5 साल की सजा हुई। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने निचली अदालत के फैसले को बरकरार रखा था। अभयुक्त ने सुप्रीम कोर्ट में मामले की अपील की इसकी सूचना परिजनों को नहीं दी गई। बच्ची के पिता ने कहा कि सरकार का दायित्व था कि सुप्रीम कोर्ट में चल रहे मामले की समय से परिजनों को जानकारी दी जाती। आरोप लगाया कि सरकार द्वारा तय वकीलों ने ठीक ढेग से पैरवी नहीं की।

मामले में पिथौरागढ़, गंगोलीहाट, बेरीनाग, थल, डीडीहाट, अस्कोट, हल्द्वानी, देहरादून सहित जगह-जगह प्रदर्शन हुआ है। कांग्रेस सहित तमाम पार्टियों ने इस मामले को जोर से उठाते हुए सरकार पर सवाल दागे हैं। पूर्व सीएम हरीश रावत, पूर्व सांसद प्रदीप टम्टा, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या सहित तमाम नेताओं ने मामले में सरकार की आलोचना की है।

Enjoy Beauty of
Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट सम्पर्क
नरेन्द्र सिंह रावत 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
मो.न.
8958525979,
9411134775
नानासेम, मुनस्यारी
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
फोन सम्पर्क-
05961-222236
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

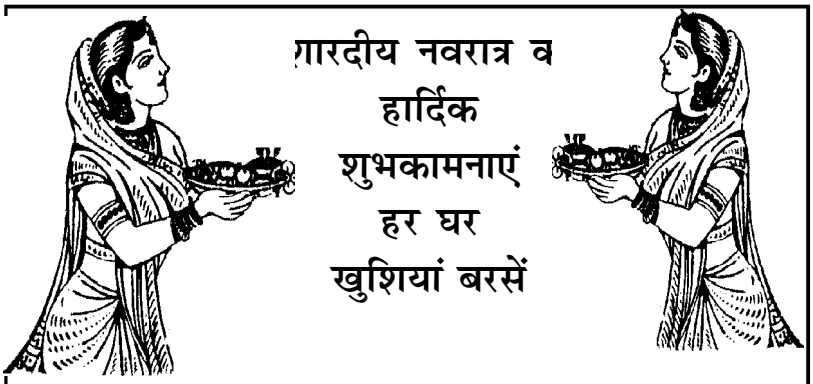

SIDDHIVINAYAK
SOLVENT
LLP
ELDECO Sidcul Industrial Park
Sitarganj
(U.S.Nagar)

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel
Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Hayat Paradise
Bus Station
Munsiari
Ph. 09411556700, 9997733070

धमोत
होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
www.mountainheights.in
मो. 9760007148

प्रथम पृष्ठ का शेष

सत्ताधारी भाजपा एकदम ताकत में दिखाई दे रही है और यह कहा जा रहा है कि पुष्कर सिंह धामी के चेहरे पर ही भाजपा अगला दांव चलेगी। प्रदेश में चारों ओर जिस प्रकार धामी और उनकी टीम ने सबको साधा है उससे वह मजबूत तो हैं ही। बीच-बीच में इस तरह की अफवाहों को बल मिलता रहा है कि भाजपा अब मुखिया को बदलने जा रही है लेकिन सीएम के रूप में धामी ने इनका मुंहतोड़ जवाब दिया है। हर मौके पर पर वह अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए यह साबित कर चुके हैं कि वह चारों ओर सतर्क हैं। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि वर्तमान राजनीति में धामी काफी परिपक्व हो चुके हैं और जानते हैं कि किसको कैसे साधना है। इस बीच भाजपा संगठन ने अपनी टीम को मजबूत करते हुए उसमें कई जिम्मेदारियां सौंपी हैं। मजबूत संगठन, सत्ता और ताकत को देखते हुए बहुत से वह नेता भी अभी चुप्पी साधे हुए हैं जो अन्दर से सुलगे हुए हैं। वह जान चुके हैं कि पुष्कर सिंह धामी की सीधी पकड़ नरेन्द्र मोदी व अमित शाह से है और मौके को अपना बना चुके हैं।

कांग्रेस की बात करें तो विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में इसका संगठन है और इस समय पूर्व मुख्यमंत्री हरीश सिंह रावत 'हरदा' की अगुवाई में दल के अधिकांश नेता हैं। हरदा मौके-बेमौके कई बार चुनाव न लड़ने की बात और कुर्सी की चाहत न होने के साथ ही पार्टी के लिये समर्पित होने की बात कहते रहे हैं लेकिन मौका और स्थिति ऐसी बनती जा रही है कि पार्टी को उनकी और उनको पार्टी का मोह आगे बनाया हुआ है। ऊपर से तेज-तर्रार नेता हरक सिंह रावत पूरे जोश से जुटे हैं। हमेशा किसी न किसी कारण चर्चा में रहने वाले हरक सिंह को बहुत देर से यह समझ आने लगा है कि दबंगता के अलावा और कुछ भी है इस दुनिया में। हरक सिंह भाजपा पर फायर बयानबाजी करते हुए हरदा का गुणगान कर रहे हैं। भाजपा के बड़े नेताओं पर आरोप सहित अपनी गलती के लिये माफी भी मांग रहे हैं और कभी चुटकी ले रहे हैं तो कभी कार्यकर्ताओं में जोश भर रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या की टीम भी अपने बचाव के साथ कांग्रेस को ताकतबर बनाने में जुटी है।

बात यदि तीसरी ताकत की करें तो इस पर्वतीय प्रदेश में उत्तराखण्ड क्रान्तिदल क्षेत्रीय दल होने के नाते महत्वपूर्ण है और वर्तमान में युवाओं का जोश इस ओर दिखाई दे रहा है। प्रदेश के तमाम मुद्दों को लेकर युवा लगातार प्रदर्शन कर रहे हैं और आगामी चुनाव में एकतफा ताकत लगाने की बात कर रहे हैं। पार्टी में सबसे अनुभवी नेता के रूप में पूर्व विधायक काशीसिंह ऐरी भी अपने साथियों के साथ जल, जंगल, जमीन के मसले उठाते हुए लोगों को चेता रहे हैं। असल बात तो यह है कि जब चुनाव का विगुल बजता है तब बड़ी पार्टियों का शोर इतना ज्यादा होता है कि क्षेत्रीय दल की गणना आम जनता भूल जाती है। ऐसे में यह कहना कठिन है कि यूकेडी एकतरफा होगी। इतना जरूर है कि यदि दल सूझबूझ की रणनीति बनाता है तो कुछ सीटों का लाभ पा सकता है।

कुल जमा प्रदेश में नेताओं की पौंध बहुत तेजी से फैल रही है। परिपक्व और संस्कारित नेताओं के अलावा निरंकुश होकर चल रहे नेताओं की संख्या बढ़ती जा रही है। इस बात की चिन्ता वयोवृद्ध नेता और समाजसेवी कर चुके हैं। आम जनता भी हालातों को जान रही है लेकिन चुनाव गणित इतना उलझाव वाला है कि कौन किस पार्टी में घुसकर जन प्रतिनिधि के रूप में होगा कहा नहीं जा सकता है। प्रदेश की राजनीतिक तरावट में मौका पाने को बेताब युवाओं की संख्या काफी है। सेवा के बजाय उद्योग के रूप में जनप्रतिनिधि बनने की आदत ने छोटे-छोटे ग्रुप भी तैयार कर दिये हैं जो प्रदेश में हलचल करने लगे हैं। इस पूरे माहौल का निचोड़ 2027 के चुनाव में मिलना है।

जोहार महोत्सव नवम्बर में होगा

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी इस वर्ष जोहार महोत्सव 8, 9 व 10 नवम्बर को करने जा रही है। इस बार स्मारिका प्रकाशन की तैयारी भी है। आयोजन को भव्य बनाने के लिये बराबर मंथन किया जा रहा है। सोसाइटी के श्री डी.एस.पांगती ने सभी से आयोजन के लिये अपने अमूल्य सुझाव व सहयोग देते हुए जुड़ने का आह्वान किया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल
9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)